स्वाधीनता की कविताएं

ISSN 2394-1723
मूल्य : 40 रुपए

वागर्थ

वर्ष 32 अंक 369 अगस्त–2026

संस्कृति की स्वाधीनता और डिजिटल मनोरंजन

जवरीमल्ल पारख हितेंद्र पटेल बसंत त्रिपाठी
वैभव सिंह अच्युतानंद मिश्र
प्रस्तुति : मधु सिंह

कहानियाँ

प्रतीक्षा रम्य
आशीष दशोत्तर
गोविंद उपाध्याय
तरुणकांति मिश्र (ओड़िया)
योकोमित्सु रीइचि (जापानी)

भारतीय भाषा परिषद

ISSN : 2394-1723

वागर्थ

भारतीय भाषा परिषद की मासिक पत्रिका

वर्ष 32, अंक 369, अगस्त 2026

संपादक

शंभुनाथ

प्रबंध संपादक

प्रदीप चोपड़ा

प्रकाशक

डॉ. कुसुम खेमानी

संपादन सहयोग

अंक सज्जा

सुशील कान्ति

संपादकीय विभाग

36 ए, शेक्सपियर सरणी

कोलकाता–700017

vagarth.hindi@gmail.com

7449503734

(दिन 12 बजे से संध्या 6 बजे)

आवरण

तारक नाथ राय

इस अंक में

संस्कृति की स्वायत्तता : **संपादकीय** 5

कहानियां

जो बचा रह गया भीतर : **प्रतीक्षा रम्य** 12

झुर्रियां : **आशीष दशोत्तर** 23

चौराहा बजरंगबली : **गोविंद उपाध्याय** 27

जख्म (ओड़िया) : **तरुणकांति मिश्र**

(अनुवाद : **प्रदीप कुमार राय**) 34

कविताएं

अश्विनी कुमार/हरे प्रकाश उपाध्याय/प्रीति विश्वकर्मा

अपूर्वा श्रीवास्तव/तरसेम गुजराल/विनीत कुमार

गरिमा सक्सेना/सुशील बड़कुर/निमा लामा/मनीषा गुप्ता

अविनाश भारती 41

स्वाधीनता की कविताएं 60

परिचर्चा

संस्कृति की स्वाधीनता और डिजिटल मनोरंजन :

जवरीमल्ल पारख/हितेंद्र पटेल/बसंत त्रिपाठी/वैभव सिंह

अच्युतानंद मिश्र/ (प्रस्तुति : **मधु सिंह**) 62

स्मरण

लोक संवेदना के स्वर : सत्यनारायण

(प्रस्तुति : **राजेश कुमार साव**) 86

विश्वदृष्टि

तांगे पर सवार (जापानी कहानी) : **योकोमित्सु रीइचि**

(अनुवाद : **अनुश्री**) 90

समीक्षा संवाद

परंपरा से प्रतिरोध तक : **मृत्युंजय श्रीवास्तव**

(विश्वनाथ त्रिपाठी, विजय बहादुर सिंह और रोहिणी अग्रवाल की पुस्तकें) 99

सोशल मीडिया 110

विविध

पाठक संसद/किताबें/सांस्कृतिक गतिविधियां 113

लघुकथा

जाति : **आरती आस्था** 22

श्यामपट : **शुभ्रा उपाध्याय** 40

बतरस

पीपली : मरता किसान-बढ़ता टीआरपी : **कुसुम खेमानी** 117

देश-देशांतर

के. शिवा रेड्डी (तेलुगु)/**टोमस ट्रांस्ट्रोमर** (स्वीडिश)

पत्रिका में रेखांकन :
काजल भट्टाचार्य,
कमल कोड़िया तथा नेट
से साभार

वागर्थ सदस्यता और बिक्री संपर्क

एक प्रति : 40/-

सामान्य वार्षिक सदस्यता (डाक व्यय सहित) : 450 रुपये

वार्षिक सदस्यता (रजिस्टर्ड डाक) 450+510 = 960 रुपये

त्रैवार्षिक सदस्यता : 1350 रु.। रजिस्टर्ड डाक से = 2880/-

आजीवन : 10,000 रुपये/**(साधारण डाक)** विदेश : **वार्षिक** : 80 डॉलर

भारतीय भाषा परिषद के नाम से चेक या ड्राफ्ट भेजें

एजेंसियों और सदस्यों द्वारा चेक से भुगतान Bharatiya Bhasha Parishad के नाम या Neft द्वारा : Kotak Mahindra Bank, Branch : Loudon Street, A/c no. 8111974982, IFSC Code KKBK0006590 पर भुगतान करें।

भुगतान के बाद एस एम एस या व्हट्सअप कर दें 8910269814 : **मीनाक्षी दत्ता**

जानकारी : कार्यालय के दिन दोपहर 12 बजे से संध्या 6 बजे तक

समय पर भुगतान करने वाली एजेंसियों को ही हम भविष्य में पत्रिका भेज पाते हैं।

● प्रकाशित रचनाओं से संपादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

© सर्वाधिकार सुरक्षित

● वागर्थ से संबंधित सभी विवाद कोलकाता न्यायालय के अधीन होगा।

● वेबसाइट : **www.bharatiyabhashaparishad.org**

वागर्थ प्रबंध प्रभार **: मीनाक्षी दत्ता**

वितरण तथा अन्य कार्य **: बैद्यनाथ कामती, खेत्राबासी बारीक, संतोष सिंह, प्रदीप नायक, प्रेम नायक**

आप क्यू आर कोड स्कैन करके भी **भारतीय भाषा परिषद** के नाम भुगतान कर सकते हैं। भुगतान करने के बाद मोबाइल नंबर सहित संपूर्ण विवरण भेज दें।

संपादकीय

संस्कृति की स्वायत्तता

नई सदी में क्या संस्कृति एक घायल आत्मा है? अगर संस्कृति केवल मनोरंजन की वस्तुओं से बनी चीज नहीं है और उसका संबंध ज्ञान भंडार, उच्च मूल्यों, संवेदना, सदाचरण और सृजनशीलता से है तब आज उसमें एक भारी क्षय लक्षित किया जा सकता है।

संस्कृति का क्षय केवल साहित्य के विलुप्त हो जाने तक सीमित नहीं है। क्षय का असर मनुष्य के विचार-व्यवहार, जीवन शैली, सोच, भौतिक विकास और पर्यावरण पर भी है। उसका प्रभाव शैक्षिक और राजनीतिक परिवेश तक विस्तृत है।

इन दिनों शिक्षित लोग भी संस्कृति के व्यापक अर्थ को भूलकर केवल पर्व-त्योहार, रीति-रिवाज आदि को ही संस्कृति समझ लेते हैं जबकि संस्कृति के दायरे में जातीय भाषा, कला-साहित्य, जीवन मूल्य, पर्यावरण चिंता, ज्ञान परंपराएं और अन्य बहुत सारी चीजें आती हैं।

लक्षित किया जा सकता है कि धर्म की तुलना में संस्कृति में अधिक विस्तार है, अधिक समावेशिकता और अधिक स्थान-काल संवेदनशीलता है। धर्म कठोर हो तब भी उस धर्म में आस्था रखने वाले लोगों के सांस्कृतिक सरोकारों में खुलापन संभव है। 19वीं सदी में धर्म पुराने ही थे पर सुधार आंदोलनों, साहित्यिक नवोन्मेषों तथा राष्ट्रीय भाषाओं के आधुनिक विकास ने सांस्कृतिक परिवेश काफी बदल दिया। संस्कृति में अधिक मुक्त हवा होती है!

कइयों की दृष्टि में जो पुराना है वही संस्कृति है। कई लोग भारतीय संस्कृति के नाम से केवल उन्हीं बातों पर विचार करते हैं जो डेढ़-दो हजार साल पहले थीं। संस्कृति म्यूजियम नहीं है। पिछले लगभग 1200 सालों के भक्ति आंदोलन, नवजागरण और राष्ट्रीय आंदोलनों के काल में भारतीय संस्कृति में जो नया जुड़ा है उसका भी महत्व है। संस्कृति स्थिर चीज न होकर निरंतर परिष्कृत हो रहे विश्वास और विवेक के साथ-साथ अहिंसा, संवेदनशीलता,